IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 3, January 2023
Impact Factor: 7.301

हिंदी उपन्यासों में दलित विमर्श
('परिशिष्ट' और 'महाभोज' के संदर्भ में)

प्रा. डॉ. नारायण बागुल
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
वसंतराव नाईक कला व वाणिज्य महाविद्यालय, मुरुड जंजीरा, जि. रायगड
narayanbagul.1968@gmail.com

दलित साहित्य की अवधारणा वास्तव में दलित की अवधारणा से जुड़ी है। दलित के कई संदर्भगत अर्थ निर्धारित किये गये हैं एक अर्थ है 'शोषित', एक अर्थ है 'पराजित', जिसमें दमित, उपेक्षित आदि अनेक अर्थ शामिल हैं, एक अर्थ "पददलित' है, जिसमें 'पैरों से कुचला,'रौंदा हुआ आदि अर्थ समाविष्ट हैं।माताप्रसाद ने दलित शब्द के अनेक प्रयोगात्मक अर्थ बताये हैं, जिनमें 'चांडाल', 'अस्पृश्य', 'अछूत' आदि शामिल हैं।दलित शब्द का व्यापक सामाजिक अर्थ 'गुलाम', भूमिहीन' भी है दलित साहित्य युगों के शोषण से उपजी सामाजिक परिवर्तन की साहित्यिक क्रांति है। दलित साहित्य ने स्पृश्य – अस्पृश्य माने जाने वाले समाज को मंच उपलब्ध करवाया, जिसके माध्यम से वह अपने उपर हुये अत्याचार, जोर जुल्म तथा शोषण को मुक्त कर सके, असमानता तथा अन्याय को दिखाकर उसके प्रतिकार में अपेक्षित सहयोग जुटा सके। यद्यपि दलित साहित्य का वास्तविक आरंभ तो मराठी से ही हुआ और बाद मे हिंदी मे भी अनेक साहित्यकारों द्वारा दलित साहित्य लिखा जाने लगा। आज दलित साहित्यकारों की संख्या बढने के कारण रचना कार्य और सर्जना की अनुभूतियाँ भुक्तभोगी यथार्थ के नाम पर दलित साहित्य को प्रश्नों के कठघरे में खड़ा करने लगी है। 'गैरदलित लेखकों द्वारा रचे गये दलित साहित्य को कल्पित तथा मनगढ़ंत कहा गया है। दलित साहित्यकारों का कार्य क्रांतिकारी लेखन द्वारा शोषण और उत्पीड़न से रक्षा करना है। उनका साहित्य जाति और धर्मगत उत्पीड़न से समग्र मानवजाति को आर्थिक और सामाजिक शोषण से मुक्ति दिलाता है। दलित साहित्य दलित समुदाय की एक सांस्कृतिक पहचान बनाता है तथा सामाजिक अन्याय, मानवीय यातनाओ तथा शोषण से मानवता की रक्षा की अपेक्षा रखता है। दलित साहित्य की पहचान यही है कि इसने धरती से जुड़े लोगों की समस्याएं तथा दुर्दशाओं का समाधान बताया। कमलेश्वर ने दलित साहित्य को मानवतावादी साहित्य कह कर उसकी उदात्तता स्पष्ट की। विशुद्ध मानवता की मांग करने वाला यह साहित्य दलित जीवन की भयावह यातनाओं का खुला चित्रण करता है इसी कारण आज दलित साहित्य की आवश्यकता तथा महत्व है।

संदर्भः

[1]. दलित साहित्य और समसामयिक संदर्भ – डॉ. श्रवण कुमार मीना
[2]. हिंदी उपन्यासों में दलित वर्ग ––––– कुसुम मेघवाल
[3]. दलित साहित्य एक मूल्यांकन ––––– प्रो. चमनलाल
[4]. दलित चेतना और समकालीन हिंदी उपन्यास––––– डॉ. मुन्ना तिवारी
[5]. हिंदी उपन्यास समकालीन विमर्श ––– डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी